

अध्याय 4:- बस्तर का ऐतिहासिक वैभव एवं स्थल

अपने विशिष्ट भौगोलिक स्थिति के कारण दंडकारण्य है यानी प्राचीन बस्तर अपने सीमावर्ती क्षेत्र दक्षिण कौशल, विदर्भ, आंध्र, उड़ीसा से प्रायः लग रहा है

बस्तर में चारों पाषाण कालों के अवशेष इस क्षेत्र की मुख्य नदियों इंद्रावती, शबरी एवं नारंगी के तटों से प्राप्त हुए हैं।

इस क्षेत्र से पूरापाषाण काल के अनगड्डे मुठवार छुरे तथा गढ़े हुए अधिक सुघड़ तथा त्रिकोणाकार छुरे प्राप्त हुए हैं। इंद्रावती तट पर बसे कालीपुर ग्राम से कीर्तन उपकरण भी हाल ही में मिले हैं।

इंद्रावती के तट पर स्थित देउरगांव, गढ़चंदेला, बिन्ता, घाटलोहंगा तथा नारंगी नदी के तट पर स्थित राजपुर एवं गढ़बोदरा नामक स्थानों से मध्य पाषाण युग के उपकरण खुर्चन यंत्र, अण्डाकार मूठ-छुरा तथा छेदक अस्त्र पाए गए हैं।

बस्तर में महापाषाणीय स्मारकों तथा शवाधान काष्ठ स्तम्भ (अलंकरणयुक्त) प्रचुर मात्रा में मिलते हैं। काष्ठ स्तम्भ का प्रचलन तो आज भी माड़िया जनजाति में पाते हैं जिनके द्वारा शवाधान के समय काष्ठ स्तम्भ गाड़े जाते हैं, जिन पर काफी नक्काशी होती है।

बस्तर जिले की वैदिक कालीन स्थिति का स्वरूप अस्पष्ट है परन्तु महाकाव्यकाल की जो भी थोड़ी-बहुत जानकारी मिलती है वह मात्र अनुश्रुतियों एवं पौराणिक कथाओं के माध्यम से पाते हैं राजा दण्डक के इस क्षेत्र पर राज्य होने से यह क्षेत्र दण्डकारण्य कहलाया

समुद्रगुप्त की प्रयाग प्रशस्ति में दक्षिणपथ विजय में महाकान्तार का सम्बन्ध वर्तमान बस्तर क्षेत्र से ही है। कुछ इतिहासकारों ने महाकान्तार के व्याघ्रराज के नलवंशी शासक माना है। वैसे भी नलवंश का प्रमुख केन्द्र उड़ीसा प्रान्त एवं बस्तर का क्षेत्र रहा है। ये शैव धर्मावलम्बी थे जिसकी पुष्टि सिक्कों में नन्दी के अंकन से भी होती है। इस वंश के शासक बराहराज, भवदत्त तथा अर्थपति की 32 स्वर्ण मुद्राएं बस्तर के एडेंगा नाम स्थान से मिली है, तथा चार अभिलेखों में एक महाराष्ट्र के ऋद्धिपुर, दो उड़ीसा के पोड़ागढ़ तथा केसरीबेड़ा से तथा एक राजिम (रायपुर) से मिला है।

नल राजवंश की सत्ता के पराभव के बाद 11 वीं सती से नागवंश के उत्थान को बस्तर क्षेत्र में पाते हैं वे रतनपुर के कलचुरियों के प्रतिद्वंदी थे।

1023 ई. के एर्राकोट स्थान से प्राप्त शिलालेख से इस राजवंश का प्रथम शासक नृपति भूषण का उल्लेख मिलता है। इन छिंदकनाग शासकों की राजधानी बारसूर थी, जो इनके कला एवं स्थापत्य का भी प्रमुख केन्द्र रही। कुछ वर्ष पहले भैरमगढ़ में छिंदकनाग शासक जगदेव भूषण के 6 ताम्रपत्र प्राप्त हुए थे, जिसमें संवत् 985 अर्थात् 1063 ई. का उल्लेख है। राजपुर ग्राम से भी 1065 ई. का ताम्रपत्र मिला है जिसमें शासक मधुरान्तकदेव का उल्लेख है।

नागवंशी शासकों की इस क्षेत्र पर राजसत्ता 11 से 14 शती तक रही जिसमें धर्म, कला, स्थापत्य की उन्नति हुई नेपाल, बस्तर एवं बारसूर के मन्दिर इसके प्रमाण है।

इस प्रकार बस्तर क्षेत्र के राजवंशों के इतिहास को क्रमबद्ध पाते हैं। सिक्को, ताम्रपत्रों, शिलालेखों से उनके कार्यों तथा विस्तार का स्पष्ट अभिज्ञान होता है। कला एवं स्थापत्य में भी योगदान अप्रतिम है। जिनका विवरण निम्नानुसार है :-

भोंगापाल :-

जगदलपुर से 70 कि.मी. उत्तर कोण्डागांव स्थित है, जहाँ 9 कि. मी. नारायपुर तहसील के अन्तर्गत 25 कि.मी. जंगल में भोंगापाल के पास एक टीला विद्यमान है जो ईंट निर्मित है। यहाँ की आसनस्थ प्रभामण्डल युक्त प्रतिमा प्राप्त हुई है, जो 5-6 सती ई. की है तथा इसी के समीप नाले के दूसरी - तरफ मातृका प्रतिमा प्राप्त हुई है।

गढ़धनौरा :-

यह स्थल केशकाल से लगभग 12 कि.मी. दूर गढ़धनौरा है। यहाँ किले के ध्वंसावशेष मिले हैं तथा में ईंटों के बने शिव उपर के अवशेष शिवलिंग सहित तथा पास हीपास ही चतुर्भुजी विष्णु प्रतिमा मिली है। यहाँ जगह जगह ईंटों के टीले हैं। मलबा सफाई के बाद ही सम्पूर्ण वस्तुस्थिति स्पष्ट होगी। अनुमानतः यह शिव की मूर्तियां 8-9 वीं शती ई. की होगी।

बस्तर :-

बस्तर ग्राम में प्राचीन शिव मन्दिर है जो ऊंची जगती पर स्थित है जिसका अधिष्ठान कई मोल्लिङ्गों में विभाजित है। मण्डप में स्थित में तथा मन्दिर के शिखर का आमलक खण्डित सभा में है। गर्भगृह में शिवलिंग स्थापित है। यह मंदिर 10-11 ई. शदी ई. का है।

नारायणपाल :-

जगदलपुर से करीब 40 कि.मी. दूर इन्द्रावती नदी के तट पर नारायणपाल ग्राम स्थित है। वस्तुतः यह शिव मन्दिर है जो विमुख है जिसकी जलहरी से निकास हेतु सिंहमुख परिखा बनी परन्तु परवर्तीकाल में इसमें विष्णु की प्रतिमा प्रतिष्ठापित कराई है। मंदिर का द्वार अलंकृत, बेसर शैली का उच्च शिखर वाला, ऊंची जगती पर बना है। मन्दिर में प्रवेश द्वार, मण्डप एवं गर्भगृह है प्रदक्षिणापथ नहीं है।

बारसूर :-

जगदलपुर से 80 कि. मी. दूर बारसूर इन्द्रावती नदी के किनारे स्थित है। इसे मन्दिरों का नगर कहना अतिशयोक्ति न होगी। यहाँ देवरली मन्दिर जिसका शिखर ढह गया है, चन्द्रादित्य मन्दिर, मामा- भांजा मन्दिर (मूलतः शिव मन्दिर) बत्तीस स्तम्भों पर आधारित खुले मण्डपयुक्त बत्तीसा मन्दिर, गणेश की विशालकाय प्रतिमा तथा ये सभी मन्दिर 11- 12 वीं शती के हैं।

समलूर :-

गीदम से समलूर लगभग 12 कि.मी. दूर स्थित है जो दन्तेवाड़ा तहसील के अन्तर्गत आता है यहाँ प्राचीन शिव मन्दिर है जो स्थापत्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। प्रवेशद्वार पर अलंकृत नन्दी व गर्भगृह में शिवलिंग स्थापित है। मंदिर उड़ीसा के मन्दिरों की शैली का बना है।

भैरमगढ़:-

बीजापुर तहसील से करीब 40.कि.मी. जगदलपुर मार्ग पर भैरमगढ़ स्थित है। यहाँ एक प्राचीन किले का द्वार तथा अनेक तालाब एवं प्राचीन मन्दिरों के खण्डहर पाए गए हैं। गुमना तालाब के किनारे ध्वस्त मन्दिर के अवशेष मिले हैं जिनमें चन्द्रशिला, भग्न स्तम्भ तथा प्रतिमाएं मुख्य हैं। ये सभी काले पत्थर की निर्मित हैं। यह समस्त प्रतिमाएं चारों ओर बिखरी हैं तथा काफी कुछ भग्न प्रायः स्थिति में हैं।

भैरमगढ़ में शिवमंदिर में दो भैरव प्रतिमाएं एक विशालकाय दूसरी स्थापित है।

माता मन्दिर के पास खेत में एक पंक्ति में करीब 20 प्रतिमाएं रखी हैं ये सभी सैनिक प्रतिमाएं हैं।

छिंदगांव: -

यह ग्राम जगदलपुर - चित्रकूट मार्ग पर बण्डाजी से 6-7 कि.मी. अन्दर इन्द्रावती नदी के किनारे स्थित है जहाँ एक प्राचीन पूर्वाभिमुख शिवमंदिर भग्नावस्था में स्थित है। तल विन्यास में प्रवेश द्वार अर्धमण्डप, मण्डप एवं गर्भगृह है। गर्भगृह में शिवलिंग स्थापित है, शिखरविहीन मन्दिर ऊंची जगती पर बना है। मन्दिर के स्तम्भ चतुष्कोणीय व अष्टकोणीय है। मन्दिर-स्थापत्य की दृष्टिसे यह लगभग 12 वीं सती ई. का नागवंशीय शासकों द्वारा निर्मित है। इसके पास ही नवीन मन्दिर में गणेश, नटराज, चामुण्डा एवं नृसिंह हिरण्यकश्यप का वध करते आदि प्रतिमाएं स्थापित हैं।

दन्तेवाड़ा :-

गीदम से 15 कि.मी. दूर प्रसिद्ध दंतेश्वरी देवी का मंदिर है जो इस क्षेत्र का सर्वाधिक पूजनीय स्थल है। यद्यपि मंदिर के स्थान पर आधुनिक भवन में लकड़ी का जालीयुक्त यह मंदिर है। मां दंतेश्वरी देवी की गर्भगृह में प्रतिष्ठित प्रतिमायुक्त तथा नागवंशी शासकों के शिलालेखों एवं विविध कालों की प्रतिमाओं को इस भवन में प्रदर्शित किया गया है। मंदिर के द्वार पर मानवाकार गरुड़-स्तम्भ अद्वितीय है।

चित्रकूट :-

जगदलपुर से 40 कि.मी. दूर स्थित चित्रकूट जलप्रपात के पास घुमरकुंड-पारा स्थल पर एक भग्नशिव मंदिर को पाते हैं, जिसका केवल गर्भगृह है जिसमें एक विशाल शिवलिंग स्थापित है। द्वार शाखाओं में नदी देवियों को पाते हैं, जो मंदिरों से अलग है। मंदिर अधूरा है यानि छत या शिखर विहीन है, जिसके अवशेष यंत्रतंत्र बिखरे हैं। इनमें एक गणेश प्रतिमा भी है। यह 14-51वीं शती का नलवंशीय शासकों द्वारा निर्मित प्रतीत होता है। चित्रकूट ग्राम के पास खालेपारा में एक नवीन मढ़िया में उमा - महेश्वर, हनुमान स्कन्दमाता, महिषासुर - मर्दिनी, भैरव, योद्धा आदि प्रतिमाएं लगी एवं रखी हैं जो 13 से लेकर 17 वीं शती की है।

कुरुसपाल: -

यह ग्राम भानपुरी से 15 कि.मी. नारायणपाल के समीप है। यहाँ पूर्व में प्राचीन मन्दिर रहा होगा जिसकी कुछ

प्रतिमाएं एक नवीन मढ़िया की दीवारों, अन्दर एवं मढ़िया के परिसर में लगी है। इनमें तीर्थकर, उमा महेश्वर, गणेश, विष्णु, चामुण्डा, सरस्वती, योद्धा, महिषासुर मर्दिनी, कुबेर, नवग्रह पगड़ी धारी राजा आदि प्रतिमाएं प्रमुख हैं, जो 12 वीं से लेकर 18 वीं शती ई. तक की है।

छोटे डोंगर :-

नारायणपुर से लगभग 50 कि.मी. बारसूर मार्ग पर छोटे डोंगर नामक ग्राम स्थित है जहाँ एक प्राचीन मन्दिर के भग्नावशेष प्राप्त हुए हैं तथा सती प्रतिमा एवं देवी प्रतिमाएं मिली हैं। मन्दिर 12-13 वीं शती ई. का प्रतीत होता है।

केशरपाल :-

जगदलपुर से करीब 40 कि.मी. दूर भानपुरी से 10 कि.मी. पश्चिम में मारकण्डेय नदी के किनारे केशरपाल ग्राम स्थित है। जहाँ प्राचीन मन्दिर रहा होगा अब मात्र प्रतिमाएं ही शेष है जिन्हें एक नवीन मढ़िया बनाकर उसकी दीवारों में लगा दिया गया है। इन प्रतिमाओं में उमा महेश्वर, कुबेर, महिषासुर मर्दिनी, गणेश, नन्दी, नवी देवी, सैनिक प्रतिमा प्रमुख हैं ये सभी 12-14 वीं शती ई. की है।

पोषणपल्ली :-

भोपालपटनम तहसील मुख्यालय से करीब 20 कि.मी. पोषणपल्ली ग्राम है जो चिन्ताबागू नदी के किनारे अवस्थित है इस स्थल को सकल नारायण नाम से जाना जाता है। यहाँ नवीन चौकोर मढ़िया में करीब 16-17 प्रतिमाएं प्रदर्शित है। जिनकी स्थानीय लोगों द्वारा पूजा की जाती है। इनमें उमा महेश्वर, विष्णु, गणेश, नन्दी, कृष्ण, महिषासुर 'मर्दिनी' मुख्य है। जो 10 से 14 वीं शती ई. की है। प्रतिवर्ष मार्च माह में यहाँ एक विशाल मेला लगता है। इस प्रकार बस्तर जिला प्रागैतिहासिक काल से ऐतिहासिक काल तक विविध रूपों में पुरातत्वीय धरोहरों से प्रभुत सम्पन्न है।